

गोरक्षा और उसका महत्व



हमारे देश भारत में गाय का बहुत महत्व है। हिंदू शास्त्रों में गाय को बहुत पवित्र माना गया है। हाल ही में हुए शोधों से यह बात भी साबित हो चुकी है कि गाय के मांस को छोड़कर प्रत्येक उत्पाद जैसे दूध, गोबर आदि मनुष्य और प्रकृति के लिए वरदान हैं। परंतु आज़ादी के बाद भी गाय करोड़ों की तादाद में हमारे अपने ही देश में रोज़ाना काट दी जाती हैं! प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप

में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

ऑडियो लिंक : https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4Q1hJdl9qVTE5dTQ/edit?usp=sharing

सन 1813 में ब्रिटिश संसद में एक बहस हुई। बहस का मुद्दा था कि भारत को ईसाई कैसे बनाया जाए। यह बहस खत्म हुई 24 जून 1813 को और सारे सांसदों ने मिलकर कुछ नीतियों पर प्रस्ताव रखा। इस बहस के दस्तावेज़ आज भी British Parliament तथा British House of Commons से प्राप्त हो सकते हैं। इस प्रस्ताव में कहा गया कि भारत जैसे विशाल धार्मिक उपमहाद्वीप को इतनी आसानी से ईसाई नहीं बनाया जा सकता। भारत की धार्मिक रीढ़ को तोड़ने के लिए भारत का मजबूर और लाचार होना परम आवश्यक था क्योंकि नागरिकों की करुण स्थिति ही किसी नए धर्म की आवश्यकता को जन्म दे सकती थी। इसके लिए तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने एक सर्वेक्षण करवाया। उस सर्वेक्षण में पता चला कि भारत की सम्पन्नता के केन्द्र में कृषि है और कृषि के केन्द्र में है गाय! इस तरह यदि गाय को खत्म कर दिया जाए तो कृषि के साथ साथ भारत की धार्मिक आस्था पर भी बड़े पैमाने पर चोट पहुँचेगी!

जहाँ जहाँ अंग्रेज़ों की सरकार थी, वहाँ वहाँ उन्होंने बड़े बड़े कत्लखाने खुलवा दिए! उन्होंने बहुत ढूँढ़ने की कोशिश की कि कहीं से कोई ऐसा सन्दर्भ मिल जाए, जिसके बल पर वे ये कह सकें कि ऐसा करने वाले वो पहले लोग नहीं हैं, भारत के राजा महाराजा भी गाय कटवाते थे। मजे की बात तो यह है कि उन्हें हिंदू राजा तो छोड़िये, कोई मुसलमान बादशाह भी नहीं मिला (कुछ अपवाद

छोड़कर) इस सन्दर्भ में क्योंकि कई मुगल बादशाहों ने गोरक्षा के लिए समाज में कड़े नियम बनाये थे! जो अपवाद अंग्रेज़ों को मिले उनके बलबूते पर अंग्रेज़ों ने गायों को काटने का सिलसिला शुरू कर दिया। अंग्रेज़ों ने देखा कि गाय को मारेंगे तो फिर पैदा हो जाएँगी, इसीलिए उन्होंने अब बैलों को और बड़े पैमाने पर मारना शुरू कर दिया। कत्लखानों से प्राप्त मांस को अंग्रेज़ी अधिकारी खाया करते थे, यह शायद आप में से कई लोगों को मालूम भी होगा।

सन 1850 के दशक से धार्मिक संस्थाओं और नेताओं ने गौ हत्या का विरोध करना आरम्भ किया क्योंकि गायों का कटना बहुत बड़े पैमाने पर जारी हो चुका था। इस आन्दोलन में आर्यसमाज, पंजाब के सिख बंधु तथा हिंदू धर्म के विभिन्न संप्रदायों के लोग शामिल थे। 1910-1940 के आंकड़े बताते हैं कि इन 30 वर्षों में 10 करोड़ गौवंश काट दी गई! 1857 के विद्रोह का केन्द्र भी गाय ही थी क्योंकि उस विद्रोह के नायक, अमर शहीद मंगल पाण्डेय जी को जब पता चला कि ब्रिटेन से आने वाली नयी rifle (Royal Enfield) की कारतूस में गाय का मांस डला है तो उनके धैर्य की सीमा टूट गई थी!

गोरक्षा के लिए बहुत बड़े पैमाने पर आन्दोलन हुए भारत में। 1870 तक भारत में लगभग हर गाँव में एक गोरक्षा समिति थी। इस समिति में क्या हिंदू और क्या मुसलमान, सभी शामिल थे। सन 1893 में तत्कालीन वायसराय Lansdowne ने ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमंस में एक रिपोर्ट भेजी। उस रिपोर्ट में लिखा था कि अब अंग्रेज़ों का भारत में टिकना मुश्किल है क्योंकि सारा का सारा देश एकजुटता के साथ गाय को बचाने के लिए उतर आया है। उसने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि हिंदू और मुसलमान दोनों ही इस आन्दोलन में शामिल हैं क्योंकि मुसलमानों का एक बहुत बड़ा हिस्सा, गायों के उत्पाद जैसे

दूध, दही मक्खन आदि से जीवनयापन करता है। इस रिपोर्ट पर इंग्लैंड की महारानी ने टिप्पणी के रूप में लांसडाउन को एक पत्र लिखा और उसमें कहा कि गाय को काटना किसी सूरत में बंद नहीं होना चाहिए! उसने कहा कि हिंदुओं और मुसलमानों को आपस में लड़वाने का रास्ता लांसडाउन को खुद निकालना होगा! इसके बाद लांसडाउन ने एक नीति बनायी और उसको भारत पर लागू कर दिया। नीति यह थी कि उसने सारे कत्लखानों में सिर्फ मुसलमानों को नौकरियां देनी शुरू कर दीं। सामान्यतया कोई मुसलमान राजी नहीं हुआ। फिर जो बिक सकता था, उसे खरीद लिया गया और जो नहीं बिका, उसे डरा धमका कर काम पर रख लिया गया! इन सारी बातों की पुष्टि लांसडाउन ने अपनी diary में की है। उसके बाद इन अंग्रेजों ने पूरे भारत में यह प्रचार करना शुरू कर दिया कि मुसलमान गाय काटते हैं, हम नहीं! इसी का नतीजा था कि इस सदी की शुरुआत में हमारे देश ने सबसे पहला जातीय दंगा देखा!

आज़ादी से पहले सबसे बड़ा कत्लखाना लाहौर में खोला गया, जो कि automatic था। उसमें मशीनें लगी थीं। इस कत्लखाने में एक साथ सैकड़ों बैलों को मारा जा सकता था। इस बूचड़खाने को बंद कराने के लिए सबसे बुलंद आवाज़ उठाई जवाहर लाल नेहरू ने। उसने कहा कि यह कत्लखाना तुरंत बंद होना चाहिए और उसने इसे बंद कराया भी। उसने और राजेंद्र प्रसाद जी ने अपने सार्वजनिक भाषणों में कहा था कि एक बार आज़ादी मिल जाए, उसके बाद केन्द्र में एक ऐसा कानून बनवाएंगे जिससे गौहत्या हमेशा के लिए भारत में बंद हो जाएगी। संयोगवश वो दिन आया, भारत आज़ाद हुआ और इनमें से एक बना भारत का सबसे पहला प्रधानमंत्री तो दूसरा राष्ट्रपति! सन 1955 में जब एक सांसद ने गौहत्या बंद कराने के लिए एक प्रस्ताव रखा तो उसी नेहरू ने उसे खारिज कर देने की मांग की! 15 अगस्त 1947 का दिन है और आज का दिन है, बहुत सालों बाद दबाव में कानून तो बना लेकिन गाय करोड़ों की

संख्या में फिर भी कट रही हैं! आज़ादी से पहले अंग्रेज़ों के 350 बूचड़खाने थे भारत में और आज आज़ादी के बाद 36000 से ज्यादा हैं! अभी हाल ही में कर्णाटक के कांग्रेसी मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने गो हत्या से पाबन्दी हटा दी है। 2014 के डर से सरकार, अंग्रेज़ों की सन 1893 वाली नीति का ही सहारा ले रही है।

अंग्रेज़ 30 सालों में 10 करोड़ गाय काटते थे और आज़ादी के 60 सालों में सरकार 50 करोड़ से ज्यादा गौवंश का नाश कर चुकी है! क्या आपको पता है कि अगर आपकी चौखट पर एक गाय बंधी है जो दूध न देती हो और केवल चारा खाती हो, वो भी आपको एक साल में 25000 रूपए का fertilizer मुफ्त में दे सकती है? गाय के गोबर के बिना आप गेहूँ, चना, मटर आदि नहीं उगा सकते! तो अंदाज़ा लगाइए कि आज़ादी के इन 65 वर्षों में कितने खरबों रूपए का खाद, दूध, घी, पनीर, मक्खन नष्ट कर दिया गया है सरकार के द्वारा! हमारे देश में 60% माल का इधर से उधर ले जाना पशुधन या बैलगाड़ी पर अभी भी निर्भर है। केवल 40% transportation डीज़ल और पेट्रोल पर होता है। इसी बैलगाड़ी में यदि हम bearing लगा दें तो न केवल सामान जल्दी एक गाँव से दूसरे गाँव में पहुँचेगा बल्कि सामान ढोने की क्षमता में भी बढोत्तरी हो जाएगी। इसके लिए आवश्यक है कि पशुधन को बचा कर रखा जाए। इस अकेली तरकीब से सरकार का pool deficit (कच्चे तेल को बाहर से आयात करने पर जो घाटा सरकार को उठाना पड़ता है) जो कि 14-15 हज़ार करोड़ है, बहुत आराम से पूरा हो सकता है। इसकी वजह से हमारी मुद्रा को अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में गिराने की भी आवश्यकता नहीं है!

--इति--

